येसु के प्रेम से प्रज्वलित
श्रद्धांजलि
माता अन्ना मेरी बेर्नादेत्त किस्पोट्टा
संत अन्ना की पुत्रियाँ राँची धर्मसंघ की संस्थापिका
उनकी 55वीं पुण्यतिथि के अवसर पर
16 अप्रैल 2016

बेर्नादेत्त न्यूजलेटर 16 अप्रैल 2016 / अंक 1

संदेष

अपने जीवन को ईष्वर तथा उसके मिशन के लिए समर्पित करने के पश्चात् माता अन्ना मेरी बेर्नादेत्त आज से 55 वर्ष पूर्व इस दुनिया से विदा होकर स्वर्गीय पिता ईष्वर की गोद में चली गयी । हम ईष्वर को धन्यवाद देते हैं उनके जीवन दान, व्यक्तित्व और उससे बढ़कर उन सभी विषिष्ट वरदानों के लिए जिनके द्वारा उन्होंने संत अन्ना की पुत्रियों के धर्मसंघ, राँची की स्थापना की। उनकी 55वीं पुण्यतिथि पर हम आनंदित हैं क्योंकि झारखण्ड–अण्डमान (JHAAN) रीजनल बिषप्स कांउसिल ने संत अन्ना की पुत्रियों के धर्मसंघ की संस्थापिका माता अन्ना मेरी बेर्नादेत्त किस्पोट्टा के धन्यता की प्रक्रिया को आरंभ करने के लिए सर्वसम्मति से सहमति प्रदान कर धन्यता की प्रक्रिया के लिये अनुषंसा की।

ईष्वर में खुषी मनाने और धन्यवाद देने के साथ और अधिक प्रार्थना करने का समय है। मैं प्रत्येक जन से प्रार्थना की आग्रह करती हूँ कि हमारी संस्थापिका का पवित्र जीवन पवित्र कलीसिया क्षरा पहचानी जाए। उनसे प्ररित होकर, आइए हम सब विषेषकर करुणा के इस जयंती वर्ष और फा. कोन्सटंट लीवन्स, ये.सं. को समर्पित वर्ष में त्याग और तपस्या करें।

सि. लिण्डा मेरी वॉन, डी. एस. ए.
सुपीरियर जेनरल

सरगाँव,
एक बच्ची का जन्म

2 जून 1878, मेरी बेर्नादेत्त, पिता पूर्णप्रसाद और माता पौलिना की प्रथम पुत्री का जन्म सरगाँव के एक लूथरन (जी. ई. एल. – गोस्सनर एवान्जेलिकल चर्च) परिवार में हुआ था जो भारत के झारखण्ड राज्य में आता है।

16 जून 1878, ख्रीस्त आनन्दित रुथ का बपतिस्मा लूथरन चर्च में

5 वर्ष की आयुः

बेनादेत्त राँची ले जायी गई और लूथरन चर्च के बेथेसदा प्राईमरी स्कूल में उसकी दाखिला करा दी गयी। वहाँ वह पास्टर के यहाँ रहती थी। उसने देखभाल अपनी पुत्री की तरह किया।

कुछ समय पश्चात् पास्टर ने उसे बालिका छात्रावास में रख दिया। वह पढ़ाई में गंभीर और उद्यमषील थी और दूसरों के लिये एक आदर्ष थी।

काथलिक कलीसिया में धन्य कुँवारी मरियम के लिए भक्ति को देखकर वह लूर्द की माता मरिय म की ओर आकर्षित हो गई।

31 जुलाई 1890, को उसने काथलिक विष्वास को स्वीकार किया, उसी दिन प्रथम परमप्रसाद भी ग्रहण किया और उसे नया नाम दिया गया : मेरी बेर्नादेत्त। इसके पश्चात्उसे लोरेटो धर्मबहनों के स्कूल में दाखिला करा दिया गया। कुछ ही वर्षों में वह धर्मबहनों की सेवा से प्रेरित हुई। बेर्नादेत्त ने उन्हीं 'मादरों' की तरह अपने देष के लोगों की सेवा करने को ठान लिया। उनकी अन्य तीन सकूल सहेलियाँ : सेसिलिया, बेरोनिका और मेरी का भी वही सोच रहा जिसके लिये वे विवाह करान नहीं चाहती थीं।

पढ़ाई समाप्त होते ही समुदाय की प्रथा के अनुसार बेर्नादेत्त व उनकी अन्य सहेलियों के लिये विवाह की व्यवस्था की गयी। बहुत से प्रयास किये गये और प्रलोभन भी दिये गये, लेकिन वे अपने निर्णय में अडिग रहीं। बेर्नादेत्त उनकी स्वभाविक नेता रही।

24 मई 1897, बेर्नादेत्त और उनकी अन्य तीन सहेलियों के सोच जानकर कलीसिया के अधिकारियों ने उन्हें पहले सोदालिती में सदस्य के रुप में स्वीकार किया।

26 जुलाई 1897, उन चारों लड़कियों को संतकी पुत्रियों राँची के धर्मसंघ में प्रथम प्रार्थिनियों के रुप के ग्रहण किया गया।

6 फरवरी 1899, नवषिष्यालय में प्रवेष

8 अप्रैल 1901, नवषिष्यालय में लोरेटो धर्मबहनों द्वारा प्रषिक्षण प्राप्त करने के पश्चात् तकरी बेर्नादकत्त और अन्य तीन सहेलियाँ – सेसिलिया, बेरोनिका एवं मेरी ने प्रथम व्रतधारण किया।

26 जुलाई 1906, चारों धर्मबहनों ने अंतिम व्रत लिया। परिवार के सभी प्रियजन और सगे–संबंधी उनके इस नये जीवन–षैली से खुष थे, जौभि उनकी संस्कृति के लिये यह बिल्कुल नया था।

1 नवम्बर 1903 – 31 दिसम्बर 1906, माता मेरी बेर्नादेत्त धर्मसंघ की प्रथम सुपीरियर जेनरल नियुक्त की गई।

21 नवम्बर 1915 – 31 दिसम्बर 1918, माता मेरी बेर्नादेत्त धर्मसंघ की दूसरी बार सुपीरियर जेनरल नियुक्त की गई।

14 – 29 जुलाई 1949, माता मेरी बेर्नादेत्त तपेदिक (टी. बी.) बीमारी के कारण हॉली फैमिली अस्पताल, माण्डर में भरती की गयी। जीवन के अंतिम काल के रुग्नावस्था में उनक गुण, जैसे धीरता व सहनषीलता, और भी झलकने लगे। वह कहा करती थीं ''येसु के दुःख से मेरा दुःख कितना कम है।'' पूर्ण रुप से अपने नर्स के हाथों में सौंप कर दुःख के समय कहती थी कि ''प्रभु! मैं आपके पास जाना चाहती हूँ किन्तु मेरी इच्छा नहीं, तेरी इच्छा पूरी हो।''

16 अप्रैल 1961, उसने संत अन्ना कॉन्वेंट राँची के मूलमठ में धर्मबहिनों एवं नोविसों की प्रार्थनाओं एवं तीर–विनती के मध्य अंतिम साँस ली।

5 नवम्बर 1995, माता अन्ना मेरी बेर्नादेत्त और उनकी सहयोगी धर्मबहिनों : सेसिलिया, बेरोनिका और मेरी के पवित्र अवषेष को टमटम, कांटाटोली, राँची स्थित कब्रस्थान से लाकर संत अन्ना मूलमठ राँची के प्रांगण में नवनिर्मित समाधि में ससम्मान रख दिया गया।

16 अप्रैल 2013, माता अन्ना मेरी बेर्नादेत्त की 52वीं पुण्यतिथि राँची के संत मरिया महागिरजा में बड़े धूमधाम के साथ मनायी गयी। पवित्र यूखारिस्तीय सेमारोह के मुख्य अनुष्टाता महामहिम तेलेस्फोर पी. कार्डिनल टोप्पो, राँची के महाधर्माध्यक्ष थे। इस शुभ दिन में पुरोहितों, धर्मसंघी भाई–बहनों एवं विष्वासियों ने बड़ी संख्या में साक्ष्य दिया।

24 जुलाई 2015, झारखण्ड–अण्डमान (JHAAN) रीजनल बिषप्स कांउसिल ने संत अन्ना की पुत्रियों के धर्मसंघ की संस्थापिका माता अन्ना मेरी बेर्नादेत्त किस्पोट्टा के धन्यता की प्रक्रिया को आरम्भ करने क लिए सर्वसम्मति से सहमति प्रदान की।

स्थानीय कलीसिया, माता मेरी बेर्नादेत्त किस्पोट्टा संत अन्ना की पुत्रियों के धर्मसंघ राँची की संस्थापिका की धन्यता की प्रक्रिया के लिये द सेक्रेड कॉन्ग्रीगेषन फॉर द कॉज़ेस ऑफ सेन्ट्स, रोम से अनापति (no objection) की आषा करती है।

नवम्बर 2015, माता अन्ना मेरी बेर्नादेत्त किस्पोट्टा की संक्षिप्त जीवनी रोम में द सेक्रेड कॉन्ग्रीगेषन फॉर द कॉज़ेस ऑफ सेन्ट्स ऑफिस में सौंप दी गयी है।

ABLAZE WITH THE LOVE OF JESUS
A TRIBUTE
Mother Anna Mary Bernadette Kispotta
Foundress of The Congregation of the Daughters of St. Anne, Ranchi :
On her 55th Death Anniversary
16th April 2016.

Bernadette News Letter **16 April 2016/No. 1**

Message

Fifty five years have passed since Mother Anne Mary Bernadette left this world to be in the arms of the heavenly Father after a life dedicated to God and his mission. We give thanks to God for the gift of her person, her life and above all the charism with which she founded the Congregation of the Daughters of St. Anne, Ranchi. On her 55th Anniversary, we have special reason to rejoice as the Archbishop of Ranchi, Cardinal Telesphore P. Toppo after consulting the Regional Bishops Council of Jharkhand -Andamans (Jhaan) has formally written to the Sacred Congregation for the causes of Saints, to obtain the nulla osta (No objection) for the initiation of Process of beatification for our saintly Mother.

This is a time for rejoicing and thanksgiving but above all it is a time for prayer. I appeal to each one of you to ardently pray that the virtuous life of our Foundress may be recognized by Holy Mother the Church. As exhorted by her, let us do penance specially in this Jubilee Year of Mercy and the Special Year Dedicated to Fr. Constant Lievens.

This small Newsletter attempts to give a brief glimpse into important events in the life of Mother Bernadette.

Sr. Linda Mary Vaughan, D.S.A.
Superior General

Sargaon House,
A child is born to us!

2 June 1878, Mary Bernadette, the first child of Puran Prasad Kispotta and Paulina born in a Gossner Evangelical Lutheran Church (GEL) family at Sargaon, now in Jharkhand, India

16 June 1878, - baptized Khrist Anandit Ruth in GEL Church.

AGE 5 Bernadette is taken to Ranchi and admitted in the Primary School Bethesada of GEL Church. Lives in the Pastor's house, and is treated like his own daughter.

After some time the Pastor sends Bernadette to a girls' hostel. She is a serious and enterprising student and becomes an example for others.

31 July 1890, Mary Bernadette professes the Roman Catholic faith. She is captivated by the veneration given to the Blessed Virgin Mary of Lourdes in the Catholic Church. With Baptism she receives the First Holy communion and is given a new name; Mary Bernadette. After that she could join the school run by Loreto nuns in Ranchi.

In few years from then, motivated by the service of the Loreto nuns, Bernadette thought of serving her own country and people like those "Mothers". Three other school companions: Cecilia, Veronica and Mary, had similar idea, for which they decided not to marry.

According to the custom of the community the marriage was arranged for Bernadette and her companions, as soon as they finished their schooling. Various efforts were made to convince them for marriage and even allurements were

given, but they remained firm in their conviction. Bernadette was their natural leader.

24 May 1897, Mary Bernadette and her three companions are accepted by the Church authorities as members of a Sodality.

26 July 1897, The Four girls are admitted as Postulants in a new Congregation, the Daughters of St. Anne, Ranchi.

6 February 1899, Mary Bernadette and her three companions are admitted to the Novitiate, which lasted for two years and two months.

8 April 1901,
Bernadette and her three companions Cecilia, Veronica and Mary take their First Vows, after having undergone their novitiate under the Loreto Sisters.

26 July 1906, The four girls take the Final Vows. The family members and relatives finally accept their new way of life, which was totally new to their culture.

1 November 1903 – 31 October 1906, Sr. Mary Bernadette is appointed the First Superior General of the Congregation.

21 November 1915 – 31 December 1918, Mary Bernadette is appointed the Superior General of the Congregation for the second term.

14-29 July 1949, Mary Bernadette suffers from Hemaptysis (Tuberculosis) and is admitted in the Holy Family Hospital, Mandar, in the last days of her life, she shows great patience and forbearance. Her words were, “how little is my suffering than that of Jesus!” Surrendering herself fully into the hands of the nurse she uttered “Lord! I want to come to you but not my will, but your holy will be done.”

16 April 1961, She breathed her last in the presence of novices and Religious Sisters amidst prayers and ejaculations in St. Anne’s Mother house.

5 November 1995, The Holy remains of Mother Anna Mary Bernadette and her three companions: Cecilia, Veronica and Mary are taken from the Tamtam cemetery and with due respect are transferred to the monument built in the courtyard of St. Anne's Mother House, Ranchi.

16 April 2013, The 52nd Death Anniversary of Mother Anna Mary Bernadette is celebrated with great solemnity at St. Mary's Cathedral Ranchi. The Holy Eucharist of the day was presided over by His Eminence Telesphore P. Cardinal Toppo, Archbishop of Ranchi. A great number of Priests, Religious Sisters, Brothers and the faithful witnessed the auspicious occasion.

24 July 2015, The JHAAN (Jharkhand - Andaman) Regional Bishops Council approves the initiation of the process of beatification of Sr. Anna Mary Bernadette Kispotta, the Foundress of the Congregation of the Daughters of St. Anne Ranchi.

The Local Church seeks the no objection from the Sacred Congregation for the Causes of saints, Rome for the process of beatification of Mother Anna Mary Bernadette, Foundress of the Congregation of the Daughters of St. Anne, Ranchi

November 2015, A brief biography of Mother Anna Mary Bernadette Kispotta is submitted to the office of the Causes of Saints in Rome.